



मेरे शिशु जीवन





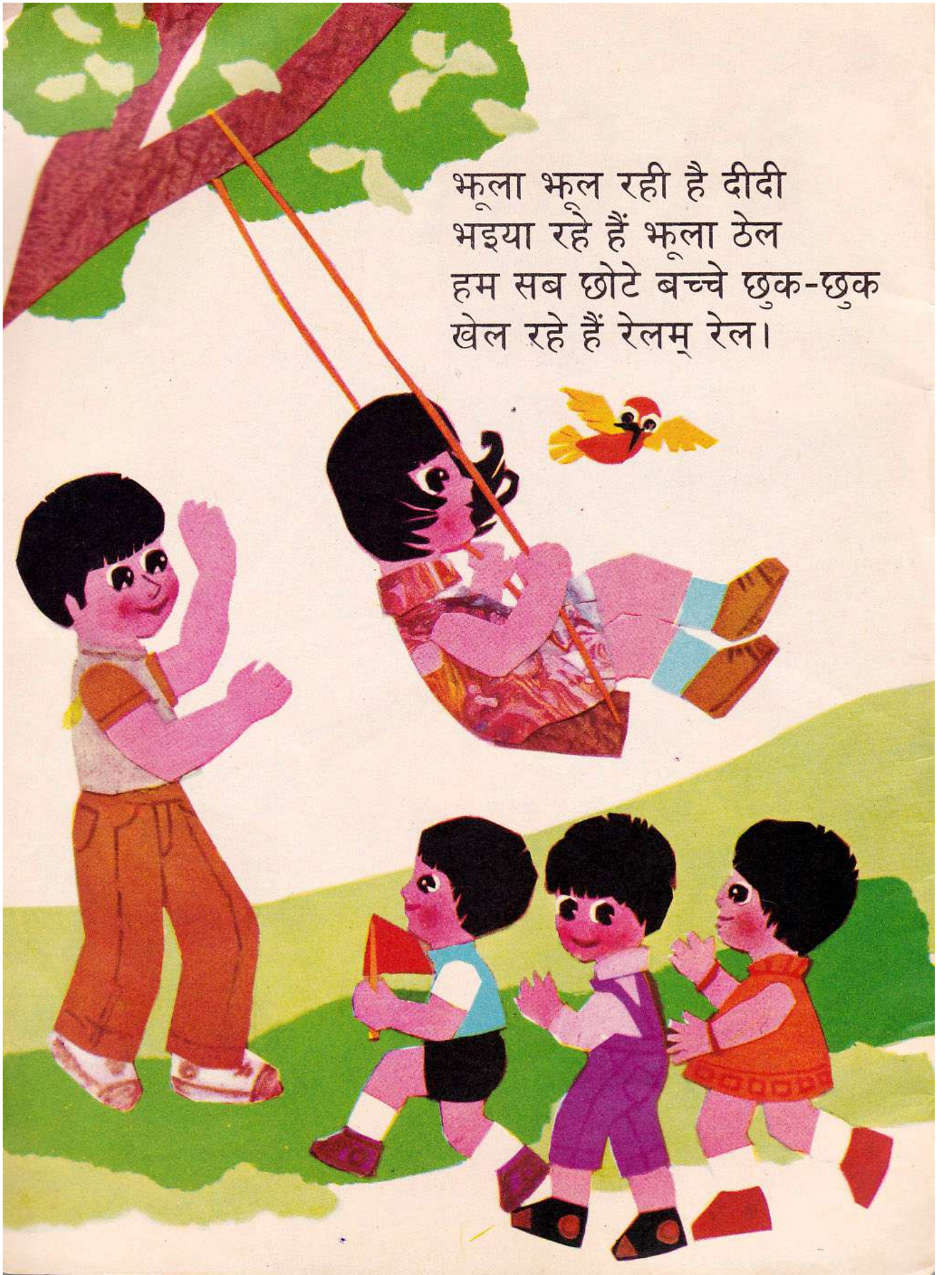
मेरे शिशु जीत

लेखिका : प्रीतवन्ती महरोत्रा

चित्रकार : अमित कुमार



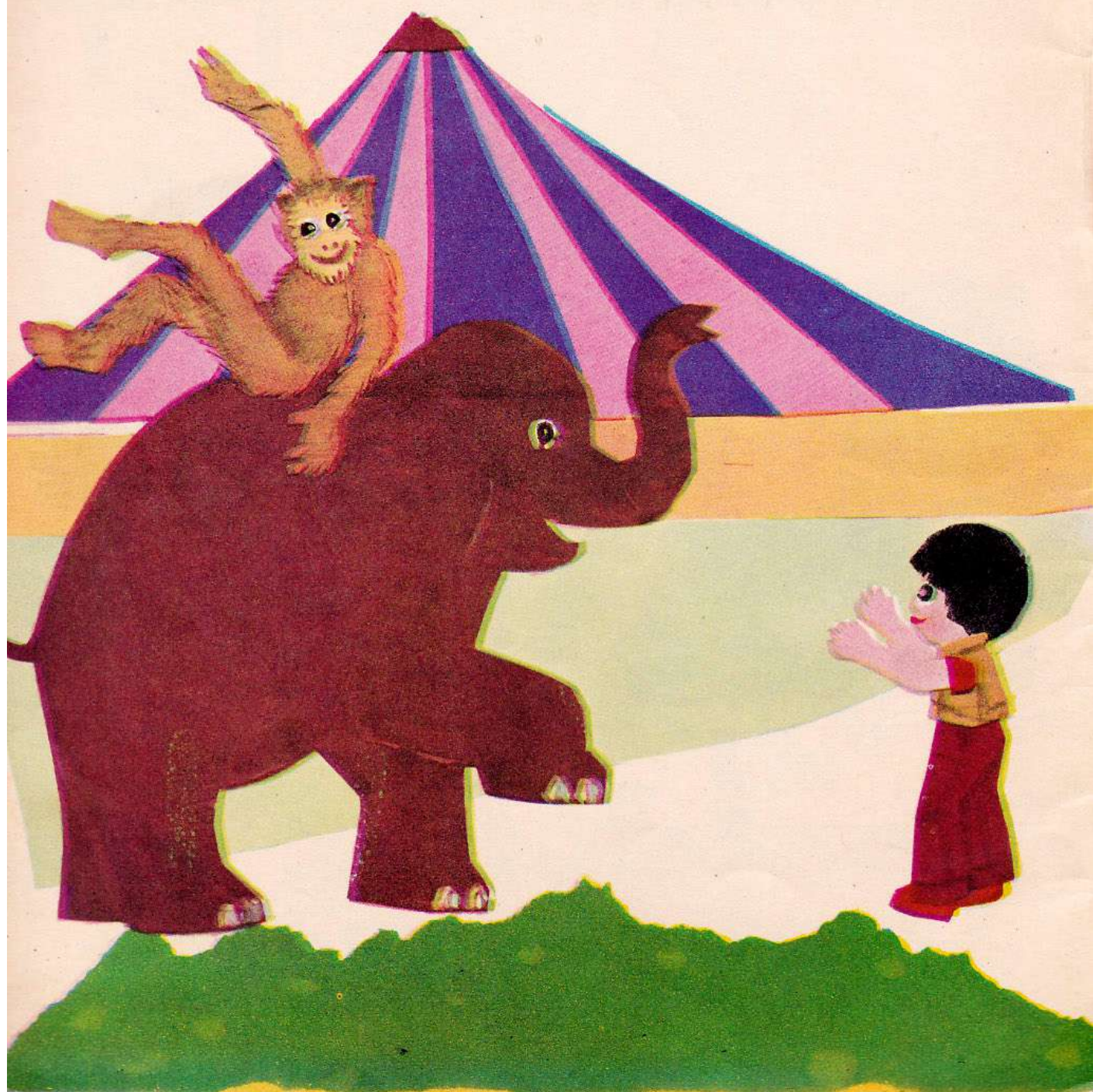
भूला भूल रही है दीदी
भइया रहे हैं भूला ठेल
हम सब छोटे बच्चे छुक-छुक
खेल रहे हैं रेलम् रेल।



हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे
काम करूं मैं बड़े-बड़े
दुश्मन को मैं मार भगाऊं
ज़रा देर में बिना लड़े।



सरकस का मैं हाथी हूँ
बन्दर का मैं साथी हूँ
बच्चों को खेल दिखाता हूँ
हंसता और हंसाता हूँ।



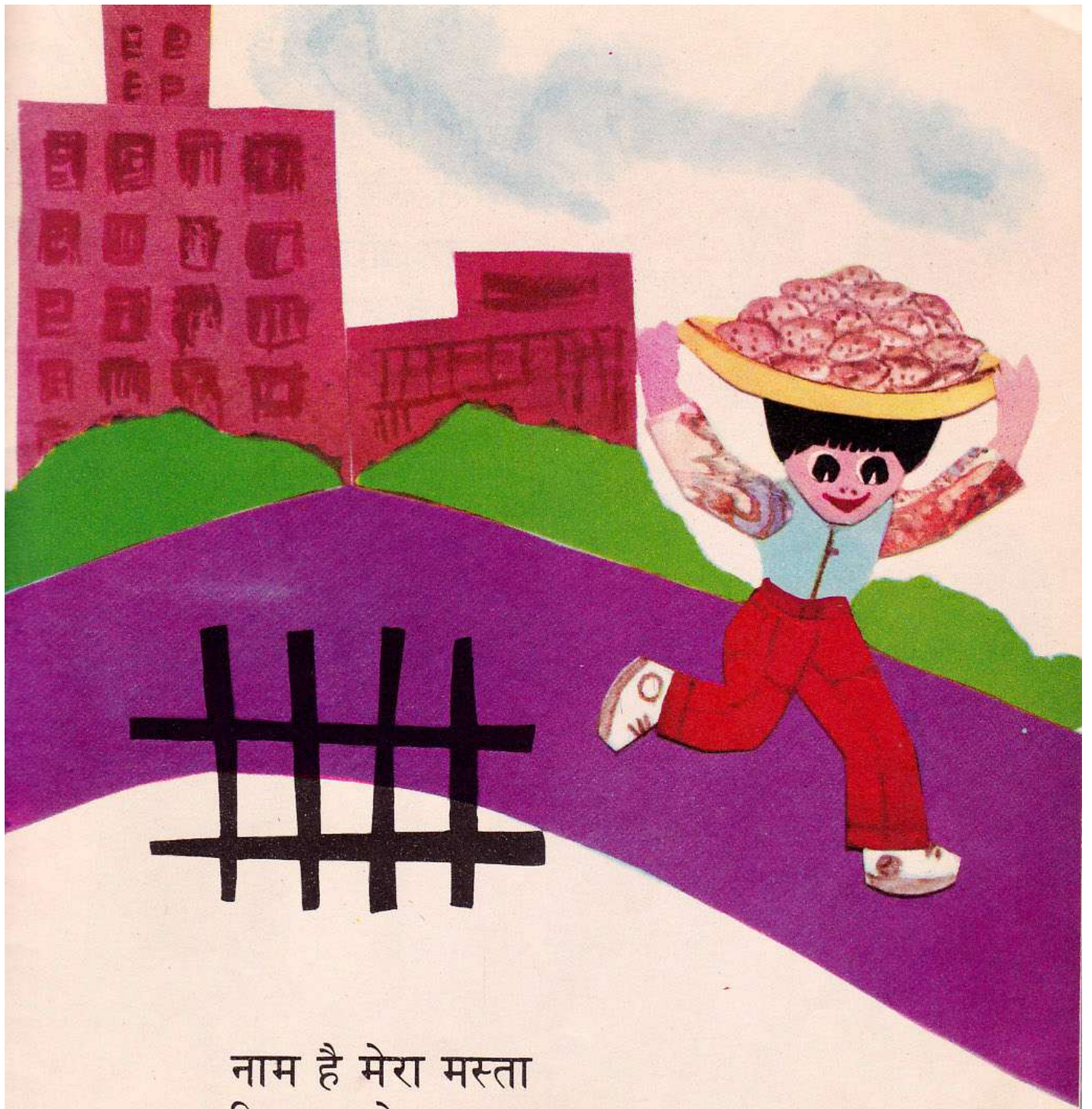


लकड़ी कटती कट-कट-कट
कीलें ठुकतीं ठक-ठक-ठक
रोटी पकती पट-पट-पट
मोटर चलती फट-फट-फट।



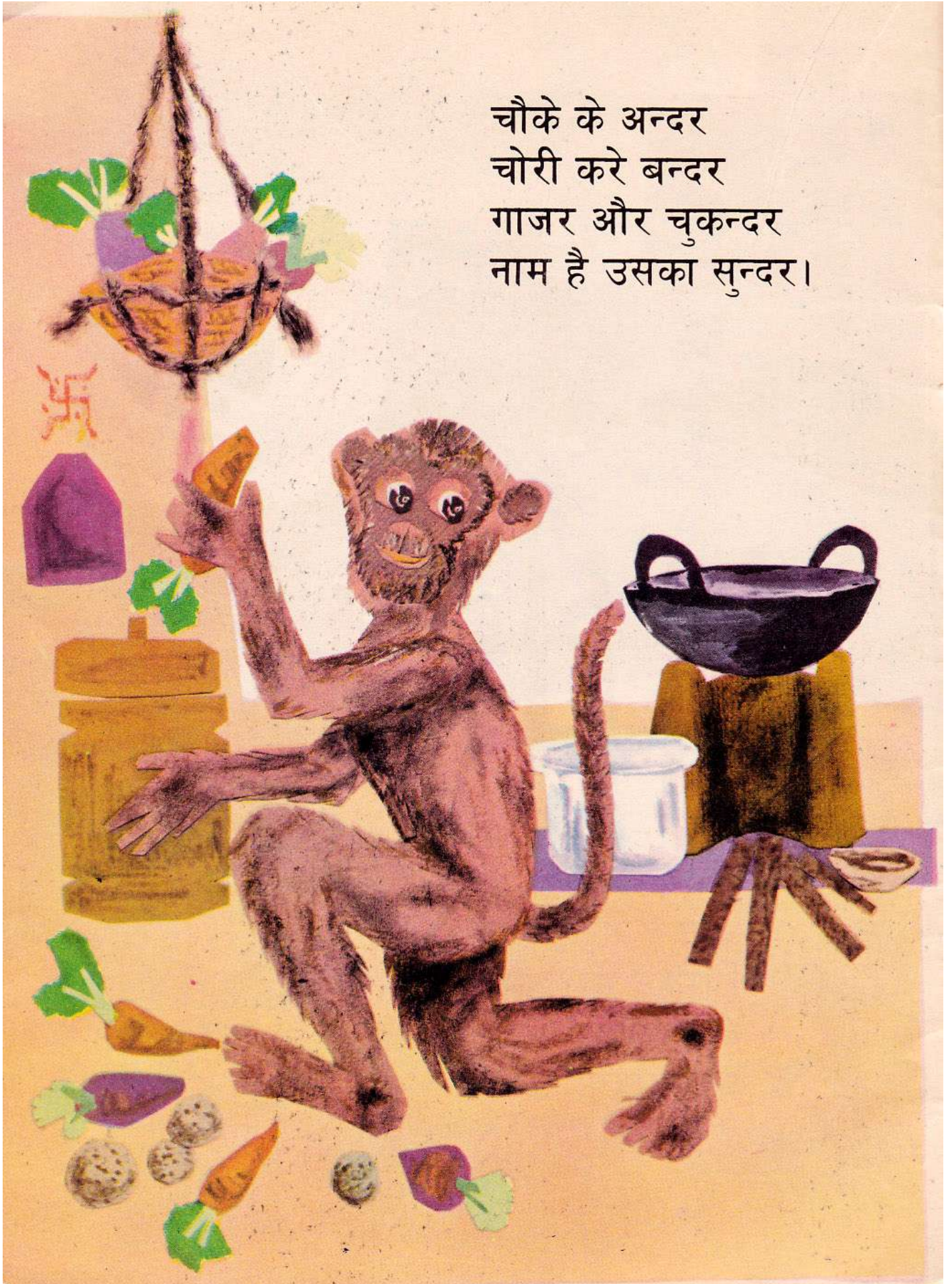
सूई में डाला धागा
धागे में मोती
अपनी नन्हीं गुड़िया की
माला मैं पिरोती।



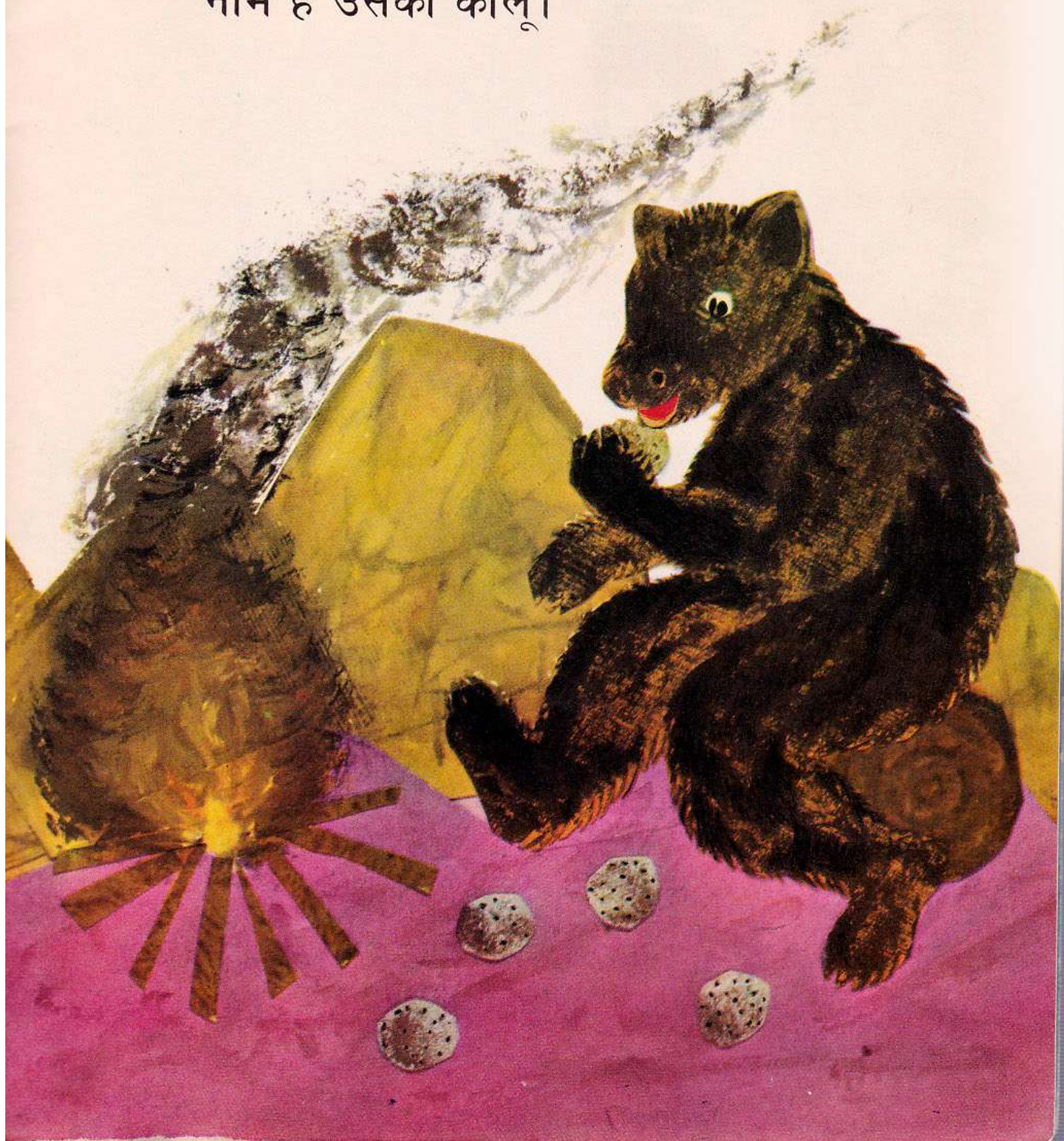


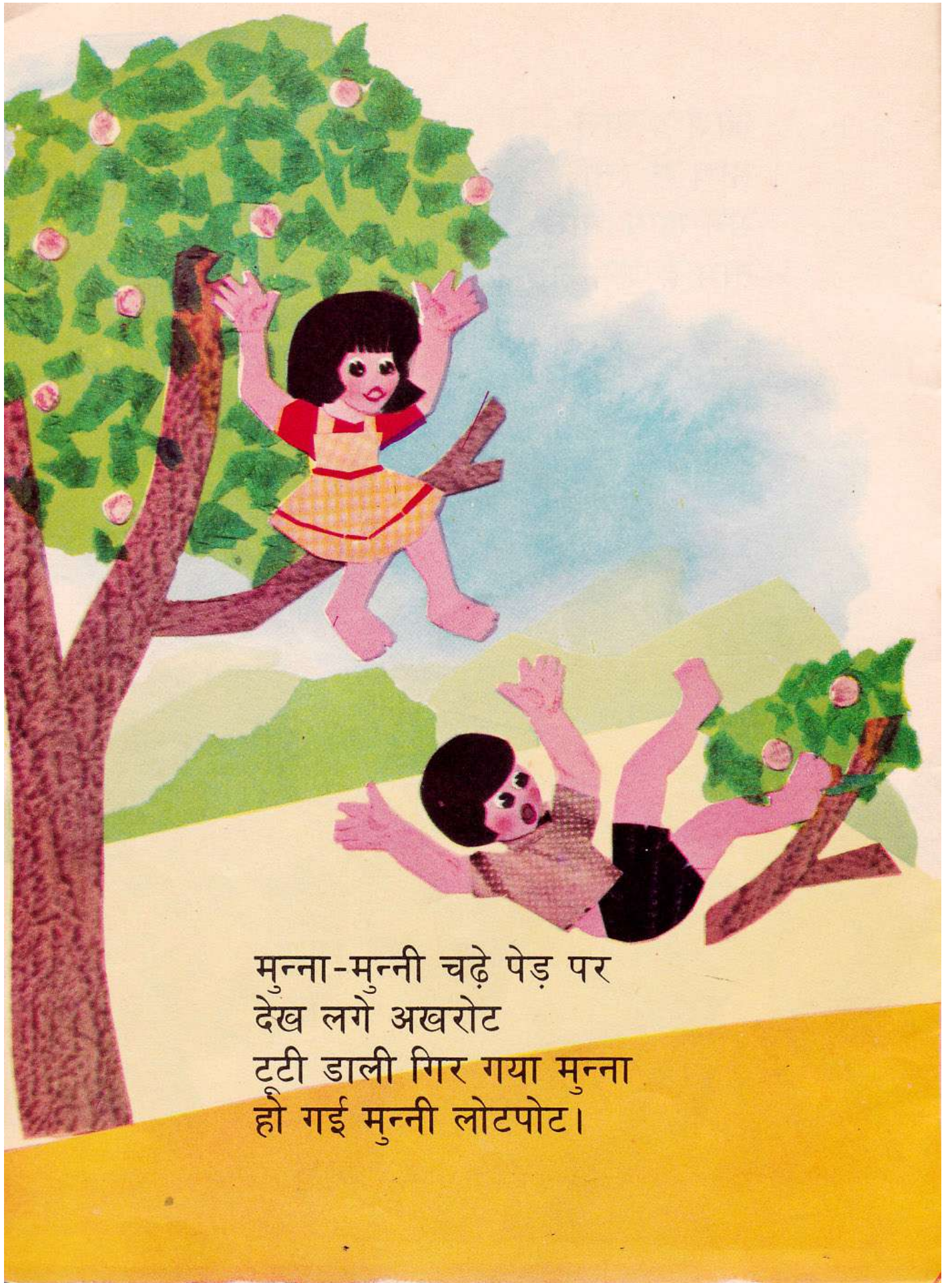
नाम है मेरा मस्ता
बिस्कुट मेरा खस्ता
ले लो माल सस्ता
कट जायेगा रस्ता।

चौके के अन्दर
चोरी करे बन्दर
गाजर और चुकन्दर
नाम है उसका सुन्दर।



आलू कचालू
साथ में रतालू
भून खाये भालू
नाम है उसका कालू।





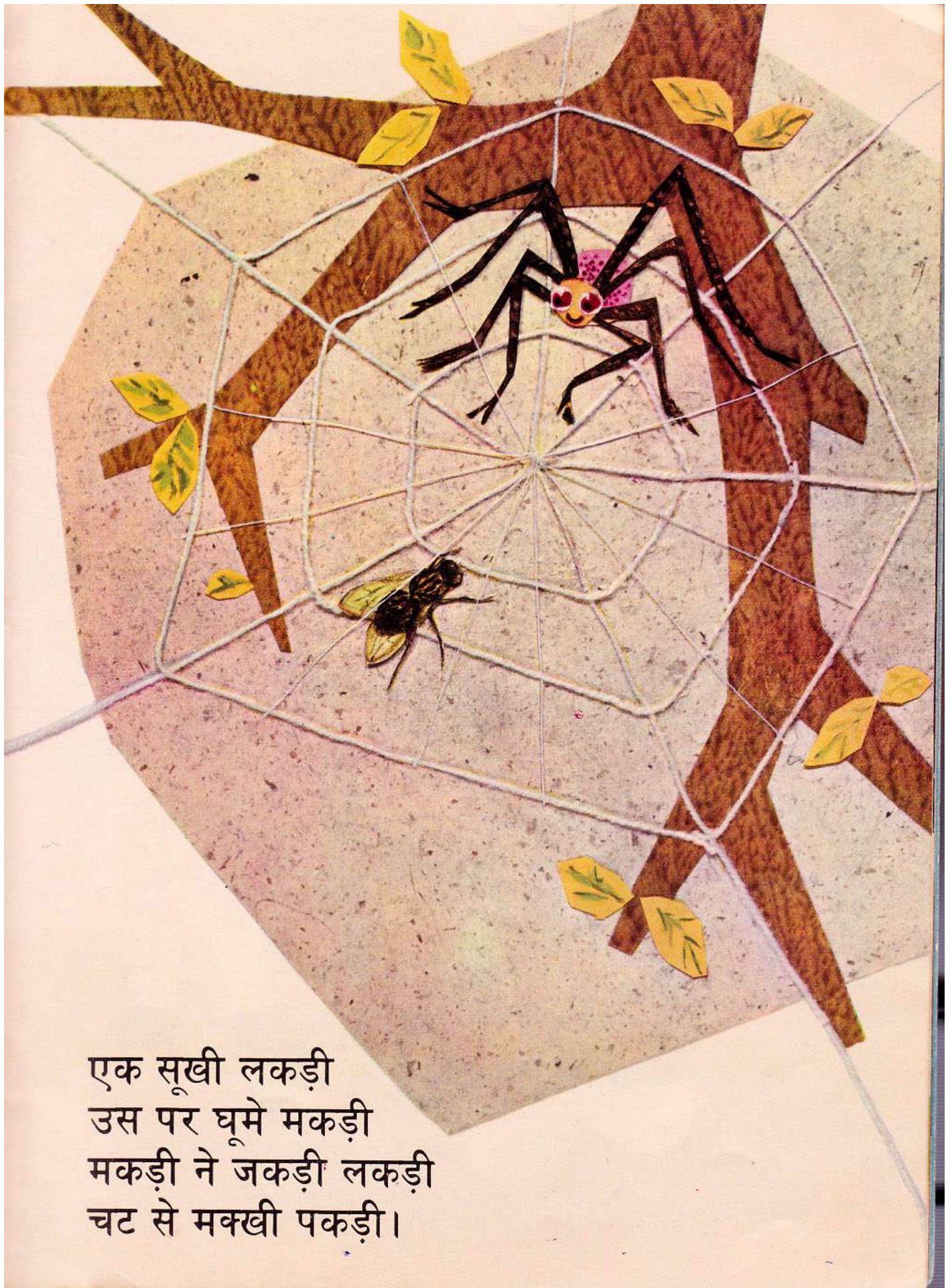
मुन्ना-मुन्नी चढ़े पेड़ पर
देख लगे अखरोट
टूटी डाली गिर गया मुन्ना
हो गई मुन्नी लोटपोट।

आलू की पकौड़ी
मूंग की मूंगौड़ी
उरद की कचौड़ी
खाके मुन्नी दौड़ी।



नन्हें-नन्हें पिल्ले दो
चूहे से लगते हैं वो
खाते नहीं हैं रोटी जो
पीते दूध और रहते सो।





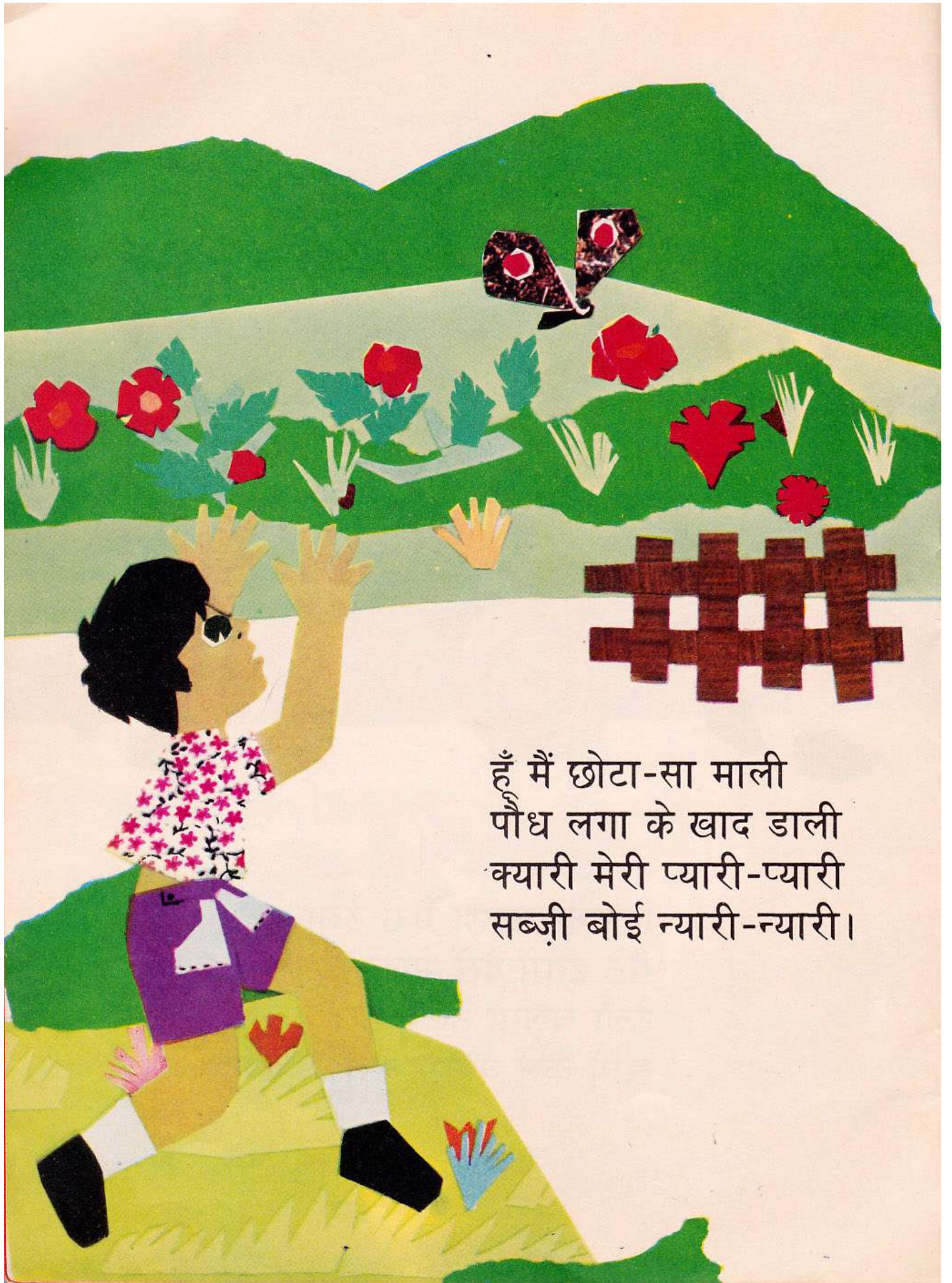
एक सूखी लकड़ी
उस पर घूमे मकड़ी
मकड़ी ने जकड़ी लकड़ी
चट से मक्खी पकड़ी।

पीले-पीले मीठे आम
काटो और छीलो आम
चाहे सुबह हो या शाम
खाओ आम खिलाओ आम।

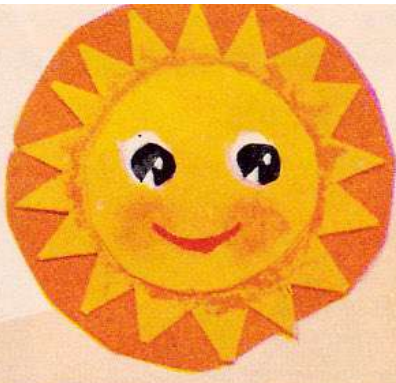




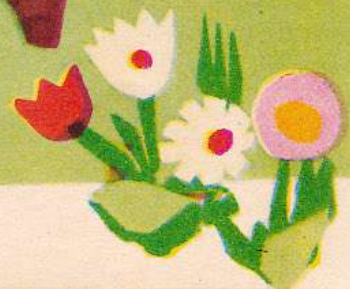
कितना अच्छा मेरा ठेला
बैठे इसमें देखें मेला
ठेला चलता ठेलम ठेल
खायें केले केलम केल।

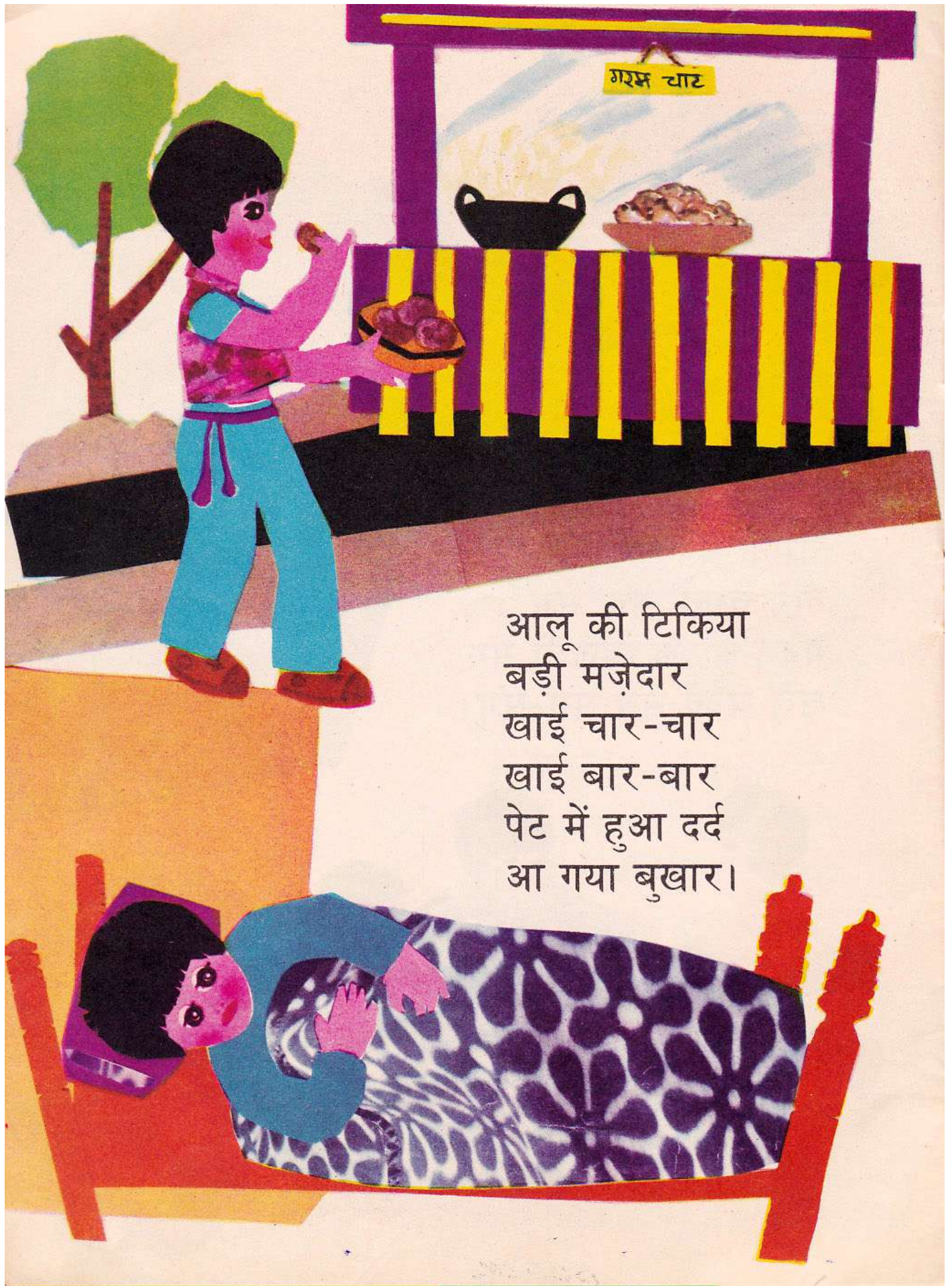


हूँ मैं छोटा-सा माली
पौध लगा के खाद डाली
क्यारी मेरी प्यारी-प्यारी
सब्जी बोई न्यारी-न्यारी।



चमके धूप सूरज संग
तारे चमकें चंदा संग
गरजें बादल बिजली संग
खेलें बच्चे सब संग-संग।



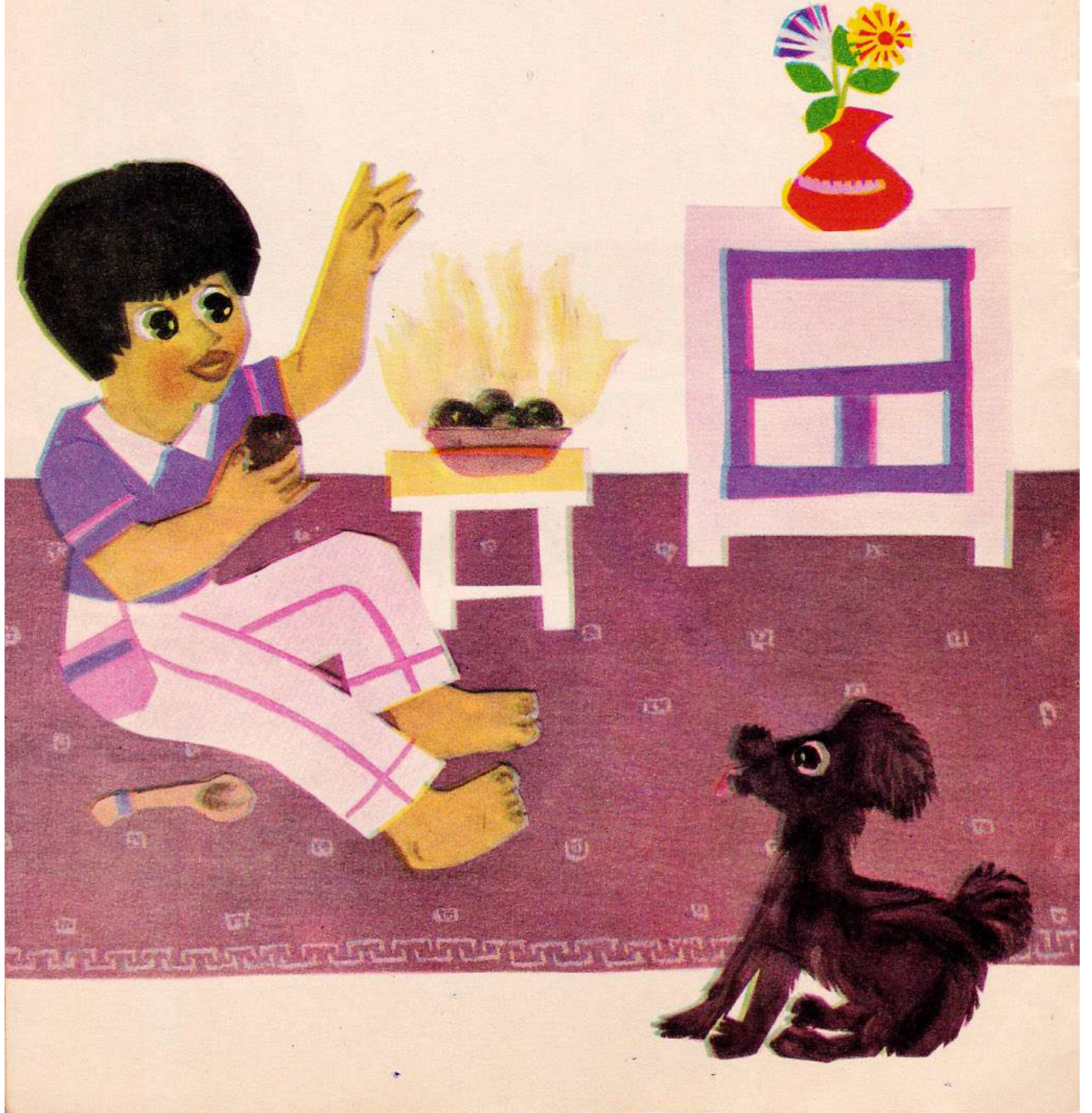


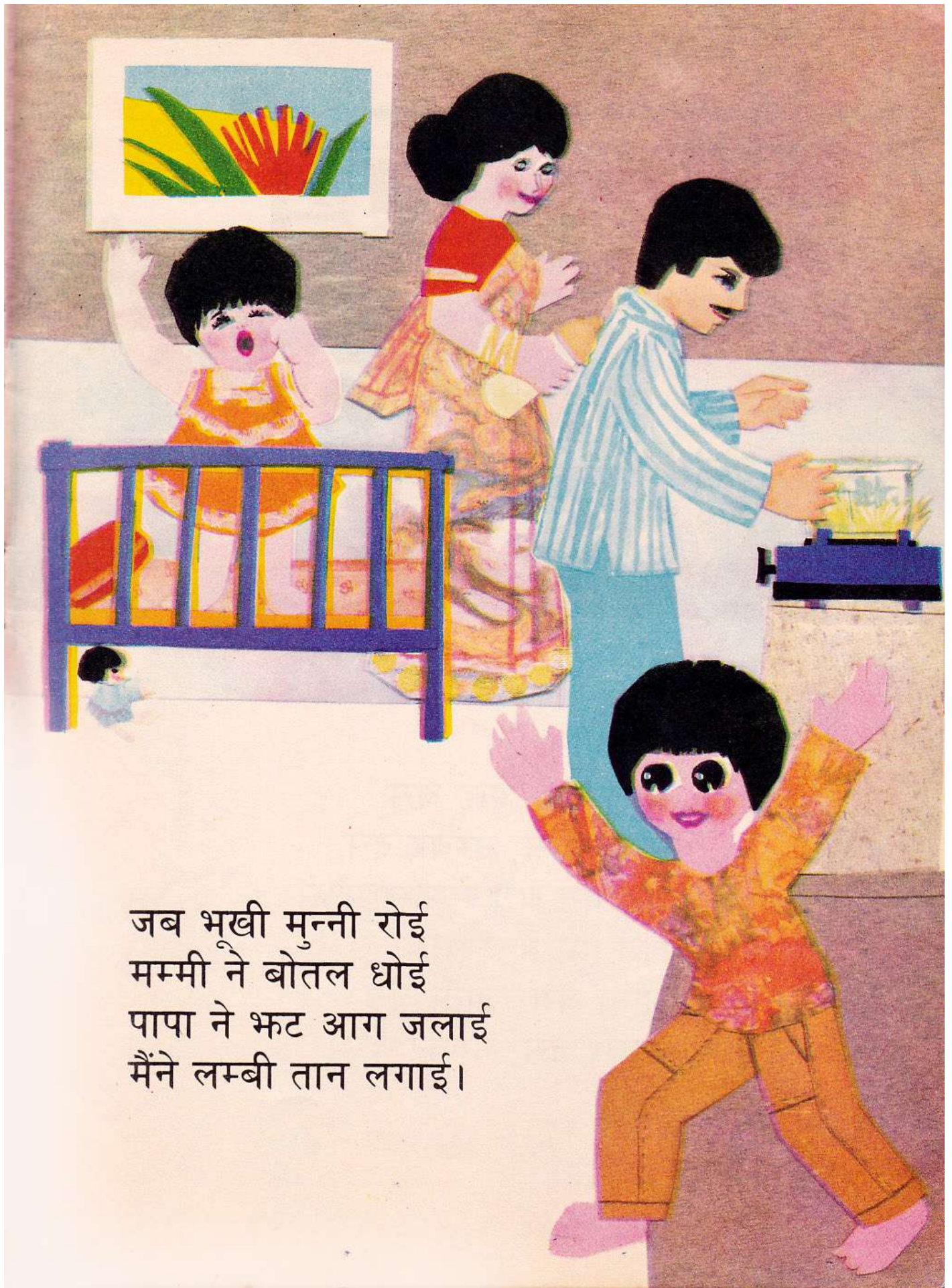
आलू की टिकिया
बड़ी मजेदार
खाई चार-चार
खाई बार-बार
पेट में हुआ दर्द
आ गया बुखार।

चीनीदानी में चींटा-चींटी
करते बातें मीठी-मीठी
चींटा बोला, "चींटी रानी
चलो घूमने आज कहीं।"

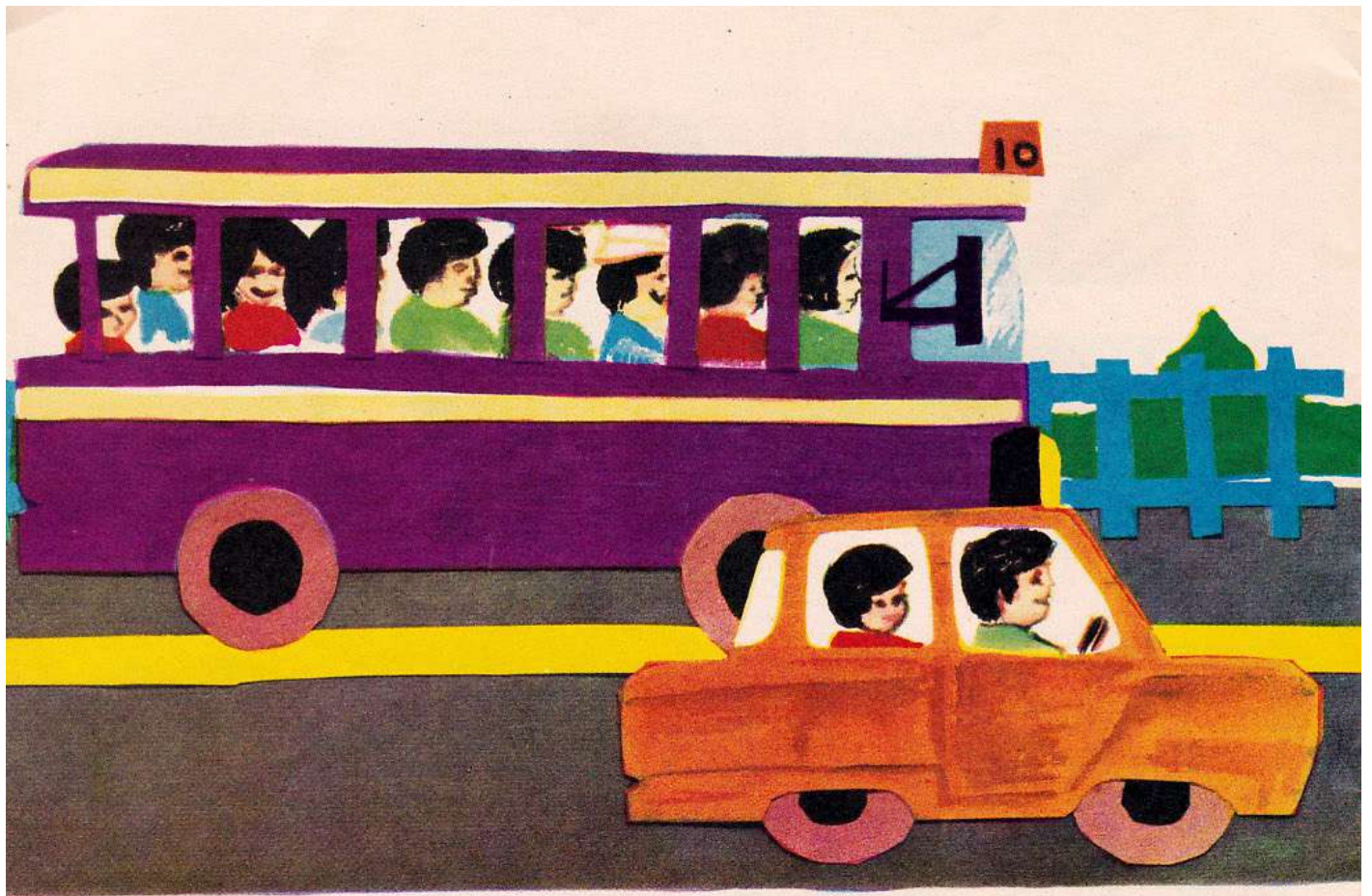


गुलाब जामुन गरम-गरम
मीठे-मीठे नरम-नरम
हैं ये देखो गोल-गोल
चटपट खाता हूँ मुंह खोल।



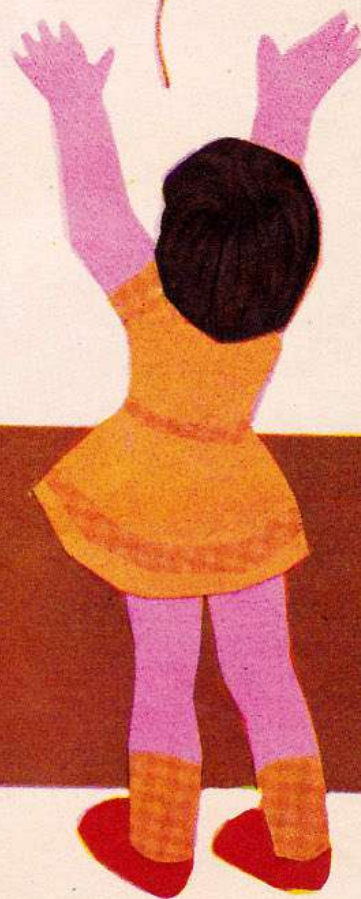


जब भूखी मुन्नी रोई
मम्मी ने बोतल धोई
पापा ने भट आग जलाई
मैंने लम्बी तान लगाई।



आई बस, आई बस
नम्बर दस, नम्बर दस
चढ़ गये बस में ठस्समठस
खड़े हुये हैं कस्समकस
आती बस, जाती बस
नम्बर दस, नम्बर दस।

गुब्बारे हैं रंगबिरंगे
फूले-फूले रंग तिरंगे
लाल हरे गुलाबी नीले
सफेद बैंगनी पीले-पीले।





प्रथम संस्करण : 1982
पुनर्मुद्रित : जुलाई 1984



चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट नयी दिल्ली

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, 1982

चिल्ड्रन्स-बुक-ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित और इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित





Rs. 4.50 H 0134